

The Oxford College of Science

हिन्दी परियोजन कार्य

विषय : ग्लोबल वासिंग

नाम : Ayesta Bara
कक्षा : B.Sc [CZBT]

19RNS85007

सामग्री (CONTENT)

01.	ग्लोबल वार्मिंग	1-2
02.	कारण	2-3
03.	घातक परिणाम	4-5
04.	जागरूकता	5
05.	ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन	5-7
06.	सारणी 1 में विभिन्न कारकों से संबंधित विभिन्न	7
07.	ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय	8



ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान बढ़ने का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आने वाले किों में सूखा बढ़ेगा, बाढ़ की घटनाएँ बढ़ेंगी और मौसम का मिज़ाज पूरी तरह बदला हुआ दिखेगा।

क्या है ग्लोबल वार्मिंग ?

आसान शब्दों में समझे तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन'। पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि (जिसे 100 सालों के औसत तापमान पर 1° फॉरेनहाइट आँका गया है) के परिणाम स्वरूप वायु के तस्वीयों में बदलाव, हिमखण्डों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप के

समने आ सकते हैं।

उल्लेखित वर्णित दुनिया की कितनी बड़ी समस्या है यह बात एक आम आदमी समझ नहीं पाता है उसे ये शब्द थोड़ा टेक्निकल लगता है। इसलिए वह इसकी तह तक नहीं जाना है। निहाय उसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकार छोड़ दिया जाता है ज्यादातर लोगों को लगता है कि किनहान संसार को इससे कोई खतरा नहीं है।

भारत में भी उल्लेखित वर्णित एक प्रचलित शब्द नहीं है और भारत-देश में लगे खेते वाले भारतीयों के लिए भी इसका अर्थ कोई मतलब नहीं है। लेकिन किनहान की दुनिया की बात को तो उल्लेखित वर्णित को लेकर व्यवस्थापियों की आ रही है। इसको 21 वीं शताब्दी का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय बिग ब्रूड यह किसी क्षुद्रग्रह (रास्टराइड) के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।

कारण

उल्लेखित वर्णित के कारण होने वाले जनवायु परिवर्तन के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैस गैस है। ग्रीन हाउस गैस, वे गैसों होती हैं जो बाहर से पिन रही गर्मियाँ ऊष्मा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों का हस्तमाला समान्यतः अत्यधिक सर्व उद्देश्यों में उन वे पौधों

को गर्म रखने के लिए रखा जाता है। ऐसे में इन पौधों को काँच के एक बंद घर में रखा जाता है और काँच के घर में गीन होश गैस भर दी जाती है। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी सोख लेती है और पौधों को गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पृथ्वी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी कि कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में हमारा पर्यावरण में फैली गीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।

अगर इन गैसों का अस्तित्व हमारे में न होता तो पृथ्वी पर तापमान में फैली गीन वरमान से काफी कम होता। गीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है, जिसे इस जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं।



घातक परिणाम

जिन हाउस गैस को गैस होती है जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर वहाँ का तापमान बढ़ने में कारक बनती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों को उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलत रहा तो शीत जलवायु में पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिछी वर्षा की छादों लियत जायेंगी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर तक बढ़ जायगा। समुद्र के इस वताव से दुनिया के कई हिस्से जलमग्न हो जायेंगे, भारी तबाही मचेगी। यह तबाही किसी विस्फोट या किसी "रोस्टेरेड" के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिये भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगी।

जाग सकता

ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का हम कोई इलाज नहीं हैं। इसके बारे में सिर्फ जाग सकता फैलाफर ही इससे लड़ा जा सकता है। हमें अपनी पृथ्वी को सही मायनों में 'ग्रीन' बनाना होगा। अपने 'कार्बन फुटप्रिंट्स' (प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन को मापने का पैमाना) को कम करना होगा।

हम अपने आस-पास के वातावरण को प्रदूषण से जितना मुक्त रखेंगे, इस पृथ्वी को बचाने में उतनी ही बड़ी भूमिका निभाएंगे।

ग्रीन ट्रेड्स गैरों का उत्सर्जन



माना जा रहा है कि इसकी वजह से उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानों में जमीन बढ़ेगी। मैदानी इलाकों में भी इतनी गर्मी पड़ेगी जितनी काशी इलाक़ा में

में नहीं पड़ी। इस वजह से विभिन्न प्रकार की जानलेवी बीमारियाँ पैदा होंगी। हमें ध्यान में रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज नर कर दें कि वह हमारे अस्तित्व को खत्म करने पर ही अमाद हो जाए। हमें इन सब बातों का ख्याल रखना पड़ेगा।

आज हर व्यक्ति पर्यावरण की बात करता है। प्रदूषण से बचाव के आय सोचता है। व्यक्ति स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्वों को समझने लगा है। वर्तमान में विश्व ग्लोबल वार्मिंग के सवालों से जूझ रहा है। इस सवाल की जवाब जानने के लिये विश्व के अनेक देशों में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग और सीजे हुई हैं। उनके अनुसार अगर प्रदूषण फैलने की रफ्तार इसी तरह बढ़ती रही तो अगले दो दशकों में धरती का औसत तापमान 0.3 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक के दर से बढ़ेगा। जो विनाशक है।

तापमान की इस वृद्धि से विश्व के सारे जीव-जंतु, वैशाल हो जाएंगे और उनका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। पेड़-पौधों में भी इसी तरह का बढ़ावा आरगा। सागर के आस-पास रहने वाली आबादी पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। जल स्तर ऊपर उठने के कारण सागर ज्यादातर शहर इन्हीं सागरों में समा जाएंगे। हाल ही में कुछ

वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि जलवायु में बिगाड़ का संतुलन इसी तरह जारी रहा तो कुपोषण और विषाणु जनित रोगों से होने वाली मौतों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हो सकती है।

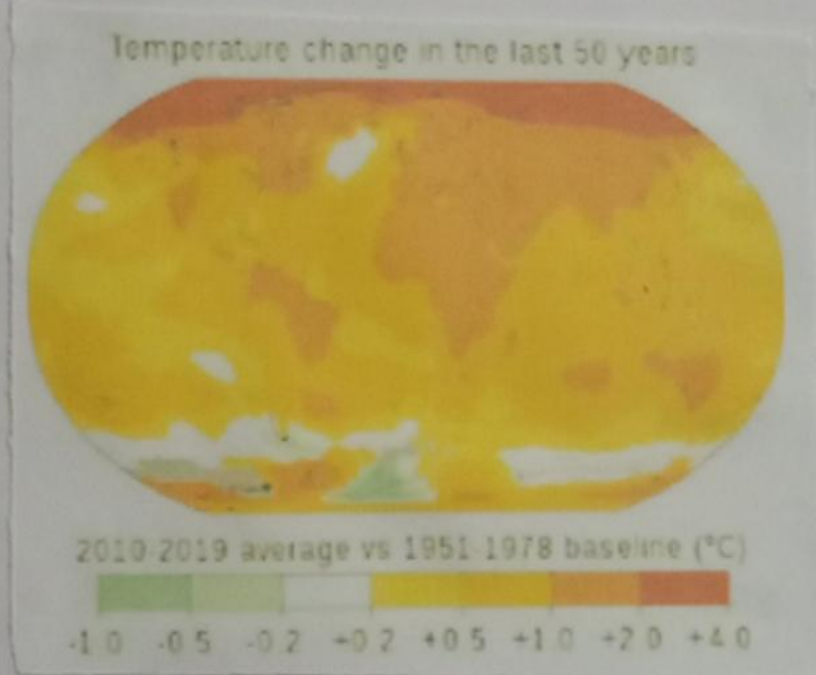
सारणी 1 में विभिन्न कारणों से रावें विभिन्न क्षेत्रों द्वारा उत्सर्जित ग्रीन हाउस गैसों का विवरण दिया गया है।

सारणी -1 - ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन

पावर स्टेशन से	21.3 प्रतिशत
इंडस्ट्री से	16.8 प्रतिशत
यातायन और गाड़ियों से	14 प्रतिशत
खेती - किसानों के उत्पादों से	12.5 प्रतिशत
जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल से	11.3 प्रतिशत
रिहायशी क्षेत्रों से	10.33 प्रतिशत
बॉयोमास जलने से	40 प्रतिशत
कचरा जलाने से	3.4 प्रतिशत

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय

वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिए मुख्य रूप से सी.एफ.सी, गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिये फ्रिज, रायर कंडीशर और दूसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या ऐसी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी, गैसों कम निकलती है।



औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकलने वाला धुआं हाजिरास्क है और इनसे निकलने वाला कार्बन डाइऑक्साइड गर्मी बढ़ता है। इस इकाइयों में प्रदूषण रोकने के उपाय करने होंगे।

वाहनों में से निकलने वाले धूरों का प्रभाव कम करने के लिये पर्यावरण मानकों का सख्ती से पालन करना होगा। उद्योगों और सासुकर रासायनिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे को फिर से उपयोग में लाने लायक बनाने की कोशिश करनी होगी और प्राथमिकता के आधार पर पेड़ों की कटाई रोकनी होगी और जंगलों की संरक्षण पर बल देना होगा।

अक्षय ऊर्जा के उपयोग पर ध्यान देना होगा यानी अगर मौसमी से बनने वाली बिजली के बढते पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान दिया जाए तो तातावरण को ठाम करने वाली गैसों पर नियंत्रण पाया जा सकता है तथा साथ ही जंगलों में आग लगने पर रोक लगानी होगी।